श्रीराधिका का दर्पचूर्ण

श्रीविष्णुपद सिद्धांत

श्रीकृष्ण-विरह से व्याकुल होकर श्रीराधा उनके साथ मिलन की आशा लेकर चल रही हैं एवं मन ही मन सोच रही हैं कि 'मैं वहाँ पहुँचकर देखूंगी–कृष्ण मेरे विरह में पागल की तरह हो रहे हैं।' पथ पर चलते-चलते राधाजी ने देखा!–कृष्ण व राधा झूलन-पूर्णिमा की रात्रि में पुष्प-निर्मित झूले में डोल रहे हैं! यह देखकर श्रीराधा ने राधारूपी नारी के पास जाकर पूछा–"तुम कौन हो?" उन्होंने उत्तर दिया, मैं

राधा और ये कृष्ण हैं।" ऐसा उत्तर सुनकर श्रीराधिका का मनक्षुब्ध हो उठा एवं उसने सोचा "कृष्ण का यह कैसा आचरण है?" फिर पथ पर थोड़ा सा और अग्रसर होते हुए श्रीराधा ने देखा–अनेक कृष्ण और अनेक राधा रासमंच पर समवेत होकर नृत्य कर रहे हैं। श्रीराधिका ने वहाँ कुछ क्षण प्रतीक्षा की एवं रास-नृत्य के अवसान होने के पश्चात् किसी एक नायिका से पुछा, 'तुम कौन हो?' उस नायिका ने जवाब दिया, "मैं राधा-कृष्ण के साथ रासमंच पर नृत्य कर रही थी।" यह सुनते ही श्रीराधा मनोवेदना से कातर होकर रोते-रोते चलने लगी और मन ही मन में कहने लगी, "अब कृष्ण के साथ भेंट होने से उनकी अच्छी तरह से खबर लूंगी,–कहूंगी–शठ प्रवंचक, तुमने मुझे कहा था कि तुम एकमात्र मेरे ही हो? परन्तु तुम तो मिथ्यावादी हो गये हो!" इस प्रकार सोचते-सोचते श्रीराधिका रोषपूर्वक अग्रसर होने लगी एवं कुछ दूर जाकर देखा कि श्रीकृष्ण होली-पूर्णिमा की रात्री में अनेक नारियों के साथ होली खेल रहे हैं। यह देखकर श्रीराधा ने एक नारी से पुछा, "तुम कौन हो?" उत्तर में उस नारी ने कहा, "मैं राधा-कृष्ण के संग होली खेल रही हूँ।" यह बात सुनते ही श्रीराधिका मूर्च्छित हो पड़ी। तब श्रीकृष्ण ने आविर्भूत होकर श्रीराधिका के मस्तक को अपने गोद में उठा लिया। श्रीकृष्ण के यत्न से श्रीराधिका की मूर्च्छा भंग हो गयी। श्रीकृष्ण को देखकर श्रीराधिका श्रीकृष्ण की भर्त्सना करते करते रोने लगी। यह देखकर श्रीकृष्ण ने श्रीराधा को प्रबोधपूर्ण-वचन से कहा, "राधा, क्या तुम पागल हो गई हो! एक राधा के अनन्त रूप हैं, एक श्याम के भी अनन्त रूप हैं; मैं भी वही हूँ एवं तुम भी वही हो। तुम अभिमान में अन्धी हो गयी थी, इस कारण जो कुछ देखा है समझ नहीं पायी हो। पथ पर जो समस्त तुम्हारी और मेरी मूर्त्तियाँ देखी थी वह समस्त साधकगण की ध्यान-कल्पित मूर्त्तियाँ थी, भक्तिरस से वह समस्त साकार हो उठी, वे सब हम दोनों की छायामूर्त्ति हैं। सत्य यह है कि तुममें और मुझमें मुहूर्त का भी विच्छेद नहीं है। तुम कभी मेरे बिना नहीं और मैं कभी तुम्हारे बिना नहीं। तुम ही मैं हूँ और मैं ही तुम हो।"

हिन्दी अनुवाद :- मातृचरणाश्रित मोहित शुक्ल

प्रार्थना

देना हो तो दीजिए जनम जनम का साथ।
मेरे सर पर रखना माता अपने करुणा के हाथ।
तुम हो माँ करुणा का सागर, करुणा खूब लुटाती हो,
शरणागत बन जो कोई आऐ उसको गले लगाती हो।
मैं द्वार तिहारे आई अब देना मुझको तार।

देना हो तो दीजिए जनम जनम का साथ।
मेरे सर पर रखना माता अपने करुणा के हाथ।
ब्रह्मविद्या का साधन देकर आत्मा का उत्थान किया
समता सह अस्तित्व समन्वय सम्यकत्व का दान दिया।
चाहे दुख में रहूँ चाहे सुख में बस रहे तुम्हारा साथ।

देना हो तो दीजिए जनम जनम का साथ।
मेरे सर पर रखना माता अपने करुणा के हाथ।
इन हाथों को दीजिए माँ सेवा का दान
इस दिल में कर दीजिए श्रद्धा-भक्ति का गान।

–मातृचरणाश्रिता सुशीला सेठिया